DOI-10.53571/NJESR.2021.4.6.7-10

श्रीरामचरितमानस एवं वर्तमान समाज तथा शिक्षा

धीरज कौशिक शोधार्थी (शिक्षा) मेवाड विश्वविद्यालय चित्तौड़गढ़ राजस्थान

Mob. 8923456344. Email:-dheerajkaushik1981@gmail.com

डॉ. बी.के.गोस्वामी विभागाध्यक्ष (शिक्षा संकाय) बाबू शिवनाथ अग्रवाल कॉलेज मथुरा

(Received:5May2022/Revised:15May2022/Accepted:25May 2022/Published:7June 2022)

प्रस्तावना-

भारत को यदि देवभूमि की संज्ञा दी जाए तो अतिश्योक्ति नहीं है। चोरी डकैती लूट भ्रष्टाचार मिलावट जमाखोरी घोटाला तस्करी दुष्कर्म समाज में गहरी पैठ बना चुके हैं। आज भारत को इस स्थिति पर लाने में धर्म तथा समाज के ठेकेदारों ने समर्थन ही नहीं किया है बल्कि पूर्ण सहयोग भी दिया है। देश के महत्वपूर्ण अंग सेना तथा सुरक्षा के महत्वपूर्ण विभागों में भ्रष्टाचार का तांडव हो रहा है। हिंसा लूटपाट आगजनी असंतोष का लावा फूट रहा है। महंगाई द्रोपती की साड़ी की भांति बढ़ती जा रही है। दुर्घटनाएं लगातार बढ रही हैं मानव कहीं पर भी सुरक्षित महसूस नहीं कर रहा है सामान्य नागरिक का जीवन कठिन है।

मानव के द्वारा थोड़े से पैसों के लिए कोई भी अनुचित कार्य करने के लिए संकोच नहीं होता है। देश के नेता कुर्सी बचाओ अभियान में लगे हुए हैं। आज नेताओं की सोच का परिचय डॉक्टर निराला राही के शब्दों में निम्न प्रकार है–

देश जाए भाड़ में सब लगे रहो जुगाड़ में

कुर्सियों के नाम पर यह वतन छला गया

आदमी से आदमी का आचरण चला गया

गुरु, माता, पिता, भाई, बहन, पड़ोसी, समाज और राष्ट्र के प्रति मानव एकदम उदासीन हो गया है मनुष्य ने अपने जीवन का एकमात्र उद्धेश्य खाओ पियो मौज करो बना लिया है। वर्तमान परिस्थिति पर नियंत्रण करने के लिए श्रीरामचरितमानस में दिए गए नैतिक मूल्यों को अपनाना अत्यंत आवश्यक है। रामचरितमानस की सीख आज के इस अंधकारमय जीवन के लिए संजीवनी होगी। इसलिए हमें यह चाहिए कि हम रामचरितमानस में दिए गए विचार जोकि नैतिकता और शिक्षा के मार्गदर्शक हैं उन्हें आत्मसात करना चाहिए।

श्रीरामचरितमानस और नैतिकता-

समाज पर नियंत्रण रखने का सर्वोत्तम साधन है नैतिकता। समाज जिस व्यवहार को तथा आदर्श को मान्यता देता है वही नैतिक स्वरूप धारण करता है। मनुष्य को सच या झूठ गलत और सही का ज्ञान आवश्यक है। अनेक विद्वानों ने नैतिकता की परिभाषा अपनी इच्छा अनुसार प्रस्तुत की है। जिसमें स्वामी विवेकानंद ने कहा है स्वार्थ रहित आचरण ही सच्ची नैतिकता है। नैतिकता की अभिव्यक्ति को धार्मिक रूप में माना गया है जो नैतिक आदर्शों के मूल्य में धार्मिक मूल्यों का महत्व नहीं जानते वह सही अर्थों में धार्मिक भावना के न होकर ढोंगी होते हैं। सामाजिक शक्ति मनुष्य जीवन को बनाने का कार्य करती है मनुष्य के नैतिक आचरण के मूल्य में कल्पना ने एक रहती है यहां नैतिकता जीवन के धार्मिक कर्तव्य परायण दृष्टि पर जोर देती है। नैतिकता को रामचरितमानस में धर्म तथा सदाचरण के रूप में स्वीकार करते हैं क्योंकि इससे जीवन को अधिकाधिक सफल, पूर्ण तथा क्रियाशील बनाया जा सकता है।

रामचरितमानस में नैतिक शिक्षा-

धार्मिक ग्रंथों के आधार पर ऋषि–मुनियों ने अपने आश्रम द्वारा सिद्ध कर दिया है कि उनका जीवन सुख प्राप्ति के लिए न होकर लोकहित के लिए है। सभी धार्मिक ग्रंथों जैसे वेद, उपनिषद, गीता, महाभारत आदि ग्रंथों में रामचरितमानस का विशिष्ट स्थान है। इन ग्रंथों में राजनीतिक सामाजिक जीवन मूल्यों का विशिष्ट शैली में निरूपण किया गया है। जिसमें नैतिकता और सदाचार की सुगंध ढंग से प्राप्तहोती है। स्वामी और सेवक, राजा और प्रजा, पति और पत्नी आदि के आचरण का कथानक रूप में वर्णन करके महात्मा तुलसीदास ने सामाजिक मर्यादा को प्रशंसनीय सुरक्षा प्रदान की तथा मनुष्य किस प्रकार का आचरण करेगा इनकी सुंदर विवेचना रामचरितमानस में की गई है जैसे–

गुरु शिष्य सम्बंध-

गुरु शिष्य के पावन संबंध का पुट मानस में प्रारंभ से ही दृष्टिगोचर होने लगता है प्रथम 4 – 5 सोरठाओ के बाद तुलसीदास जी अपने गुरु नरहरी को प्रणाम करते हुए कहते हैं कि

बंधन गुरु पद कंज कृपा सिंधु नर रूप हरि

महा मोह तम पुंज जासु बचन रविकर निकर

रामचरितमानस की प्रथम चौपाई ही गुरु वंदना से प्रारंभ होती है

बंधउ गुरु पद पदुम परागा सुरुचि सुबास सरस अनुरागा

और कहा गया है कि

गुरु बिन होए न ज्ञान ज्ञान न हो वैराग्य बिन

इस प्रकार ज्ञान का श्रुति गुरु बताया गया है।

श्री रामचरितमानस के अनुसार पुत्र का माता पिता के प्रति कर्तव्य-

कहा जाता है कि आत्मा जायते पुत्र अर्थात पुत्र पिता की आत्मा की उपज ही है।प्रत्येक पुत्र को अपने माता-पिता का सम्मान करना चाहिए। इसकी विशद व्याख्या रामचरितमानस में मिलती है। रामचंद्र जी अपने पिता की आज्ञा पाकर तुरंत अयोध्या का राज्य छोड़कर वन चले गए पिता की आज्ञा पालन के सामने उन्हें अयोध्या का राज्य तरण लगता है।

तुलसीदास जी कहते हैं

प्रात काल उठ के रघुनाथा। मात पिता गुरु नावे माता।।

आयुष मांग करहि पुर काजा। देख चरित् हरषहिं मन राजा ।।

माता पिता की आज्ञा ही जीवन का परम लक्ष्य होना चाहिए यही शिक्षा हमें श्री रामचरितमानस द्वारा प्राप्त होती है

पति का पत्नी के प्रति कर्तव्य-

जान प्रिया आपरु अति कीन्हा

वाम भाग आयसु हर दीना

बैठी सीय समीप हरि राइ

पूरव जन्म कथा चित लाई

पति को पत्नी का आदर तथा सम्मान करना चाहिए इसकी झांकी भी मानस में मिलती है

पत्नी का पति के प्रति कर्तव्य-

जदपि जोशिता नहीं अधिकारी दासी मन क्रम वचन तुम्हारी

भाई का भाई के प्रति कर्तव्य–

सुनाओ भानु कुल पंकज भानु कहूं सुभावना कछु अभिमानू नाथ करो बालक पर छोहू दूध दूध सब एकही होहूलखन का हंसे हमारे ज्ञाना सुनो देव सब धनुष समाना

राजा का प्रजा के प्रति कर्तव्य–

जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी सो नृप अवश नरक अधिकारी

इस प्रकार रामचरितमानस जीवन के प्रत्येक अंग में शिक्षा का संचार करती है। श्री रामचरितमानस सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, व्यवहारिक सभी प्रकार के संबंधों को सार्थक बनाने के लिए उत्तम ज्ञान प्रदान करती है। जाति व्यवस्था, वर्ण व्यवस्था, से ऊपर की व्यवस्था प्रेम को बताया गया है। प्रेम के वशीभूत होकर ही

राम भीलनी के जूठे बेर खाते हैं तथा प्रेम के वशीभूत होकर ही शत्रु के छोटे भाई विभीषण को अपने

हृदय से लगा लेते हैं रावण के अंत समय में लक्ष्मण को राजनीति सीखने के लिए भेजते हैं अर्थात जिसके पास अच्छा ज्ञान है उसे किसी भी समय प्राप्त करने के लिए तत्पर रहने का ज्ञान भी हमें रामचरितमानस से प्राप्त होता है। इस तरह रामचरितमानस सर्व काल लेख श्रेष्ठ ग्रंथ है।

निष्कर्ष:- इस तरह से हम इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि श्री रामचरितमानस पूर्ण रूप से समाज और देश के उद्धार के लिए अपने विचारों को स्पष्ट करती है। यदि सम्पूर्ण समाज श्री रामचरितमानस के अनुसार बताए गए रास्ते का अनुसरण करेगा तो निश्चित ही रामराज्य आना सुनिश्चित हो जाएगा। अतः हम सभी को महाकवि तुलसीदास द्वारा रचित इस महाकाव्य में दिए गए दिशा–निर्देशों को अपने जीवन में उतारना चाहिए।

संदर्भ सूची:-

1. श्रीरामचरितमानस

2. श्री सुंदरकांड

3.विनय पत्रिका

(सभी पुस्तकें गीता प्रेस गोरखपुर से प्रकाशित)